सभा प्रतिनिधि सम्मेलन सम्पन्न

नाम नहीं, सेवा भावना से कार्य करें - आचार्य महाश्रमण

सम्मेलन में गत वर्ष के कार्यों की समीक्षा और भावी योजनाओं पर हुआ चिंतन मंथन

सरदारशहर, 16 अगस्त, 2010

आचार्य महाश्रमण ने जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा आयोजित तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन के समापन अवसर पर देशभर से पहुंचे कार्यकर्ताओं को सेवा भावना के साथ कार्य करने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि जो नाम की भावना को छोड़कर सेवा भावना, निर्जरा की भावना के साथ कार्य करता है वह उच्च कोटी का कार्यकर्ता होता है। जो काम के साथ नाम की भी भावना रखता है वह मध्यम स्तर का कार्यकर्ता होता है और जो नाम ज्यादा चाहता है पर काम कम करता है वह तीसरे नम्बर का कार्यकर्ता होता है। तेरापंथी सभा प्रतिनिधियां को उच्चकोटी के कार्यकर्ता बनता है और ऐसे स्तर के कार्यकर्ताओं का निर्माण करना है।

उन्होंने श्रावक दिशा निर्देशिका का अध्ययन करन की प्रेरणा देते हुए कहा कि इसका आचार्यश्री महाप्रज्ञ के शासन काल में निर्माण किया गया। इसके अध्ययन से अज्ञान के कारण होने वाले अतिक्रमणों से बचा जा सकता है। इसके नियम श्रावक-समाज एवं संस्थाओं की अनेक समस्याओं का समाधान हो सकता है। आचार्य महाश्रमण ने सभा संस्थाओं में अवधि समाप्ति के बाद भी पद पर बने रहने वालों को अनुचित बताते हुए कहा कि निर्धारित अवधि में चुनाव कराने वाला समाज की व्यवस्था को समीचिन रखने में सहयोगी होती है। सभा संस्थाओं के पदों पर रहने वाले कार्यकर्त्ताओं में श्रावकत्व भी झलकना चाहिए। उनमें सामायिक आदि के प्रति भी झुकाव होना चाहिए।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा, अणुव्रतप्रभारी मुनि सुखलाल, महासभा प्रभारी मुनि धनंजयकुमार, जीवन विज्ञान प्रभारी मुनि किशनलाल, प्रेक्षाध्यान प्रभारी मुनि कुमार श्रमण, मुनि रजनीशकुमार, मुनि योगेशकुमार, मुनि जयंतकुमार ने सम्मेलन को विभिन्न सत्रों में अपने विभागों की जानकारी प्रस्तुत की।

सम्मेलन में महासभा एवं सभाओं के गत वर्ष के कार्यों एवं भावी योजनाओं पर चिंतन मंथन किया गया। देशभर से पहुंचे लगभग 400 कार्याकर्ताओं की फोज ने आगामी वर्ष में विकास कार्यों को गति देने का

संकल्प व्यक्त किया। महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चैनरूप चिण्डालिया ने महासभा को मिले दायित्वयों एवं आगामी योजनाओं पर प्रकाश डाला। सम्मेलन के विभिन्न सत्रों में जैन विश्व भारती के अध्यक्ष सुरेन्द्र चौरड़िया, पदमचन्द पटावरी, राजेन्द्र बच्छावत, महासभा के निवर्तमान अध्यक्ष जसकरण चौपड़ा समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञा, कन्हैयालाल छाजेड़, मुमुक्षु डॉ. शान्ता जैन, जय तुलसी फाउण्डेशन के प्रबंध न्यासी सुरेन्द्र दुगड़, डॉ. महावीरराज गेलड़ा, तेरापंथ इकाई के प्रभारी राजकरन सिरोहिया, के.सी. जैन, महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रतन दुगड़, ज्ञानशाला के राष्ट्रीय संयोजक सोहनलाल चौपड़ा, डॉ. नलिन शास्त्री, सुमेरमल सुराणा ने विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी।

महासभा के उपाध्यक्ष रतन दुगड़ ने विसर्जन योजनाओं के अन्तर्गत जिन सभाओं ने अच्छा कार्य किया उनका नामोल्लेख किया। चातुर्मास व्यवस्था समिति की ओर से महासभा के सभी पदाधिकारियों का मोमेन्टो द्वारा सम्मान व्यवस्था समिति के अध्यक्ष सुमतिचन्द गोठी, उपाध्यक्ष राजकरन सिरोहिया, महामंत्री रतन दूगड़, उपाध्यक्ष हनुमानमल पींचा, स्थानीय सभा के अध्यक्ष अशोक नाहटा द्वारा किया गया।

समापन सत्र में राष्ट्रीय अध्यक्ष ने सम्मेलन के प्रायोजक सुमतिचन्द गोठी, धनपत विशाल दुगड़, रमेश कोठारी, रणजीत कोठारी, कन्हैयालाल गिड़िया, रूपचन्द दुगड़ आदि का मोमेन्टो द्वारा स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन महासभा के महामंत्री भंवरलाल सिंघी ने किया।

- शीतल बरड़िया (मीडिया संयोजक)